पारिवारिक जीवन एवं जनसंख्या शिक्षा के उद्धेश्य

गिरिराज गुप्ता
शोधार्थी, जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

पारिवारिक जीवन की शिक्षा का अर्थ,महत्त्व एवं अवधारणाएँ (Concept of Family Life Education)

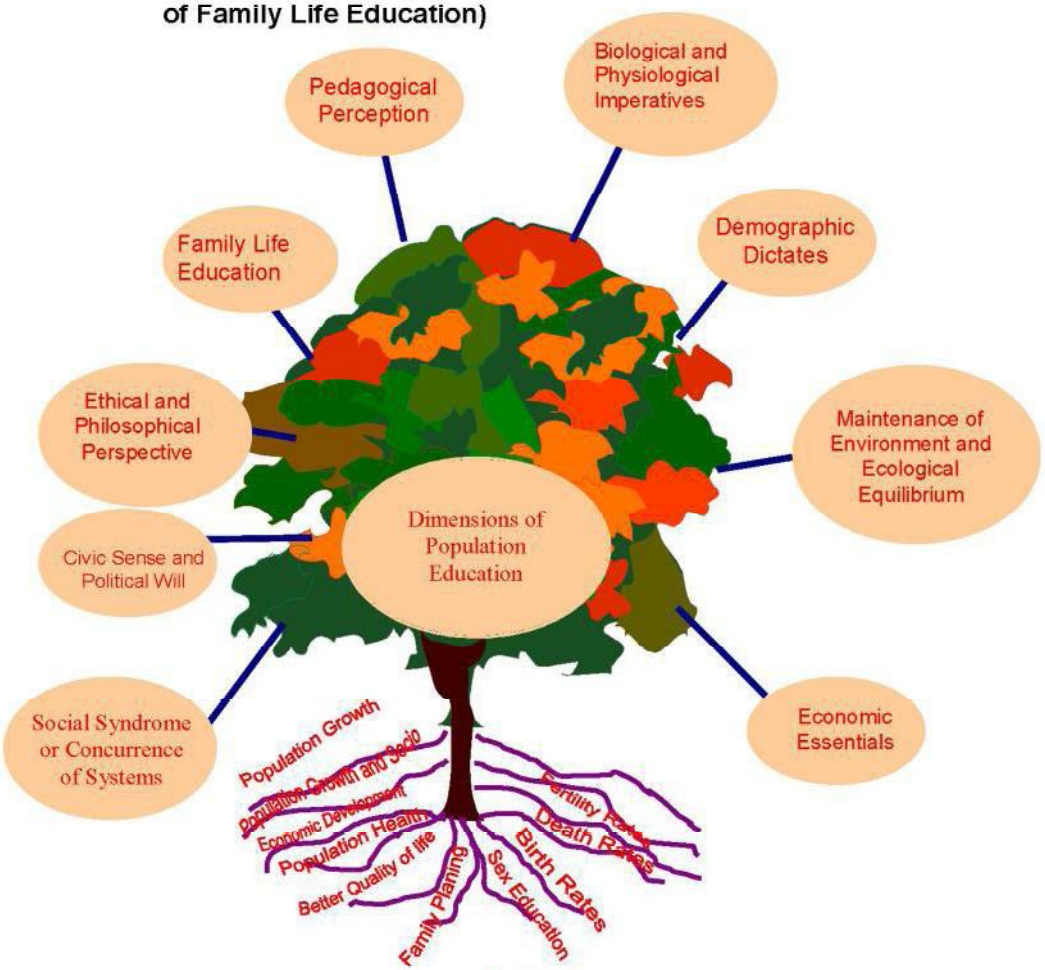

चित्र क्र. 1

पारिवारिक जीवन की शिक्षा जनसंख्या शिक्षा की एक शाखा है। सामान्य अर्थों में जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या के सम्पूर्ण ज्ञान को शिक्षा के साथ मजबूती से जोड़ने का एक राफल प्रयारा है। पारिवारिक जीवन की शिक्षा जनरांख्या शिक्षा की एक शाखा है। जो निग्न वर्गीकरण से स्पष्ट है :–

Dimensions of Population Education[1]

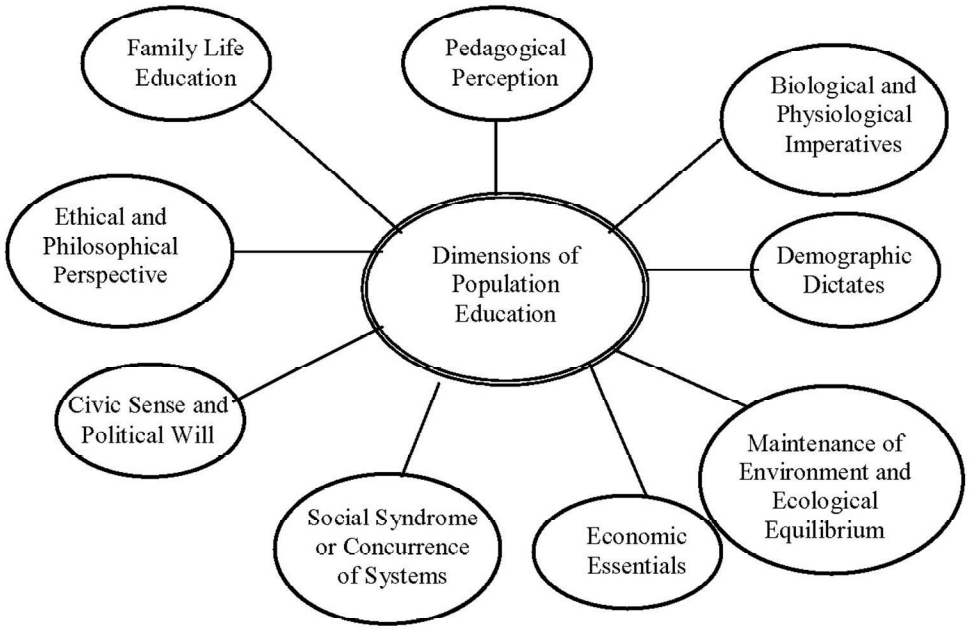

चित्र क्र. 2

प्रस्तुत वर्गीकरण से स्पष्ट है कि पारिवारिक जीवन की शिक्षा जनसंख्या शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह मानव समाज एक–एक व्यक्ति से मिलकर बना है। जैसे – व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र और अंत में सम्पूर्ण मानव समाज है।

जब जनसंख्या की बात आती है तो व्यक्ति एक महत्वपूर्ण इकाई होता है और व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज और समाज से सम्पूर्ण जनसंख्या का आँकलन किया जाता है। आज बढ़ती मंहगाई में प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार और उसकी समस्याओं को लेकर चिंतनशील है। हर समझदार दम्पति का रूझान परिवार नियोजन की ओर बढ़ रहा है। यहां तक कि पढ़े–लिखे समाज में ''हम दो हमारे दो'' की जगह पर ''हम दो हमारा एक '' वाला विचार बनाने का प्रयास चल रहा है।

"11 जुलाई विश्व जनसंख्या दिवस पर एक विशेष रिपोर्ट ''शीर्षक'' "एक ही संतान सर्वोत्तम" में डॉ तिवारी का अभिमत है कि ''अब दो बच्चों की जगह एक ही बच्चा हो तो

बेहतर है। एक बच्चे को ही बेहतर शिक्षा दे सकना अब संभव है। इसी संदर्भ में डॉ यादव का कहना है। कि ''बच्चों की पढाई और केरियर हर माता–पिता का सपना होता है। लेकिन मंहगाई तेजी से बढ़ रही है, इसलिए एक बच्चे की नीति अपनाना ही बेहतर है।

बढ़ती आबादी आज देश के लिए प्रमुख समस्या है। इसका सीधा असर देश की अर्थ व्यवस्था पर पढ़ रहा है। इसलिए कम आबादी ही ज्यादा खुशहाली ला राकती है। पारिवारिक जीवन की शिक्षा जनसंख्या शिक्षा का अगला कदम है। जिसका उद्देश्य परिवार को सीमित करना तो है ही साथ ही एक स्वस्थ, सुन्दर, खुशहाल आदर्श परिवार को जन्म देना है एवं यह भी सोचना है कि कैसे सीमित साधनों के साथ अधिक से अधिक खुशहाल रह सकते हैं। अतः पारिवारिक जीवन की शिक्षा को समझने के लिए इस तरह से शब्दों में परिभाषित कर सकते है :–

पारिवारिक जीवन की शिक्षा क्या है ?[2]

[What is Family Life Education]

परिवार एक घास की जड़ है। जिसका उपरी हिस्सा मानव समाज है। प्रत्येक व्यक्ति एक उच्च स्तर का जीवन अपने परिवार के साथ जीना चाहता है। वह परिवार खुश है जो छोटा है, और स्वस्थ है। सभी यही चाहते है। जनसंख्या शिक्षा पारिवारिक जीवन की शिक्षा पर जोर डालती है। पारिवारिक जीवन की शिक्षा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को दी जाय यह जिम्मेदारी परिवार के सदस्यों की भी होनी चाहिए। पारिवारिक जीवन की शिक्षा का परिचय देते हुए रेड्डी ने 1944 में कहा है :–

''परिवार समाज का आधार है। एक अकेला व्यक्ति समाज और परिवार दोनों का मिला जुला हिस्सा होता है। किसी भी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक विकास में परिवार की बहुत अहं भूमिका होती है। परिवार एक सामाजिक संस्थान की तरह होता है, जिसमें मानव जाति की उत्पति होती है। तथा सांस्कृतिक धरोहर, शारीरिक सुरक्षा, सुख के साधनों एवं विकास के लिए परिवार के हर सदस्य की अहं भूमिका होती है। परिवार के अन्दर और परिवार के बाहर पारिवारिक जीवन एक ऐसी संरचना है, जहां अकेला व्यक्ति सबके साथ रहता है। यदि परिवार के सभी लोग अपनी–अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाएं तो परिवार का वातावरण सुखद हो सकता है।

इसलिए हमें जरूरत है कि लोगों को शिक्षित करें, जिससे वे परिवार के अन्दर एवं बाहर अपनी भूमिका अच्छे तरीके से निभाएं। पारिवारिक जीवन की शिक्षा को अच्छी तरह समझने के बाद पारिवारिक जीवन की शिक्षा की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा जानना परम् आवश्यक है।

पारिवारिक जीवन की शिक्षा की परिभाषा–

वास्ता के अनुसार (1991)– ''पारिवारिक जीवन की शिक्षा अपने परिवार के साथ रिश्ते रखना, निभाना सिखाती है। पारिवारिक जीवन की शिक्षा का मतलब यह नही है कि सबधित खबरें एक जगह से दूसरी जगह भेजें, बल्कि अपनी एक अलग सोच निर्मित करें। अपने अलग सिद्धांत बनाएं जो अपनी पारिवारिक स्थिति पर निर्भर हो, अतः निर्णय भी स्वंय लें।

पारिवारिक जीवन की शिक्षा को कुछ इस तरह से परिभाषित किया है कि ''लोगों को ऐसा शिक्षित करें कि जब वे विकसित हो जाएं, तब वे अपने वातावरण के साथ सामन्जस्य स्थापित कर सकें और अपने हुनर का उपयोग कर सके। समाज और परिवार से निपटने के

लिए अन्तर्राष्ट्रीय योजनाएँ, सेमीनार शिक्षकों और राष्ट्रीय विकास के विशेष संदर्भ में आयोजन किये जावें। World Conference of Teachers and Practitioners (WCOTP), वर्ष 1978 इन सबको पारिवारिक जीवन की शिक्षा के संदर्भ में लागू किया जाय। जैसे कि ''पारिवारिक जीवन की शिक्षा ऐसी शिक्षा हो कि दूसरों को समझें, अपने आप को समझें और अपने हुनर से योगदान देकर खुद की समस्या, समाज और चेतावनी से सामना करने के लिए खुद को सचेत करें।

पारिवारिक जीवन की शिक्षा के उद्देश्य

पारिवारिक जीवन की शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

(1) यह विचारधारा विकसित करें कि ''खुद को एक व्यक्ति की तरह समझ पाऐं।"
(2) व्यक्तिगत जिम्मेदारी को समझ पाएं।
(3) परिवार में अन्य सदस्यों के क्या अधिकार हैं, उसे समझें।
(4) अपने अन्दर ऐसी क्षमता पैदा करें कि दूसरों के साथ आंतरिक एवं बाह्य रिश्ता कायम कर सकें।
(5) दूसरे लोग जो अपनी भूमिका निभा रहे हैं, उन्हें प्रोत्साहित करें।
(6) अपने जीवन की योजनाएं खुद तय कर सकें।
(7) बाल विकास, मानव विकास, स्वास्थ्य, स्वच्छता, सफाई, परिवार नियोजन विधि के बारे में जानकारी लेना सामाजिक, आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करना, पैसों का जीवन में महत्त्व समझना आदि।

इस तरह पारिवारिक जीवन की शिक्षा परिवार की उन्नति और विकास की ओर हमारा ध्यान केन्द्रित करती है। इसी संदर्भ में ''भारत के मनीषियों द्वारा कहा गया है, कि जिन नियमों या नीतियों से समाज सुस्थिर व उन्नत हो सकता है, उसमें सत्य, क्षमा, दया, ईर्ष्या, विग्रह, शांति, अहिंसा आदि हैं अर्थात् संयमित और मर्यादित जीवन ही सुखी जीवन की कसौटी है। यह कसौटी बदलते युगों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक परिवारिक एवं वैवाहिक नियमों का निर्धारण करती है।

भारतीय परम्परा में विवाह को एक पवित्र बन्धन माना गया है, जिसका संबंध जन्म जन्मांतरों से जोड़ा गया है। इसके पीछे कारण है कि एक पत्नीव्रत की धारणा को जन्म देकर सीमित सन्तान उत्पन्न करना है। ऋग्वेद में कहा गया है कि अधिक सन्तान वाला व्यक्ति घोर कष्टों का अनुभव करता है। महाभारत में भी कहा है कि अधिक सन्तान दरिद्रता का चिन्ह है।

इसी तरह सीमित परिवार की ओर इशारा करते हुए विनोबा भावे ने कहा है ''कलियुग में रहना है'' या सतयुग में यह तो स्वयं चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है।'' इस उक्ति में भी आबादी के आधार पर युगों को विभाजित किया गया है। अतः हमारा धर्म, संस्कृति भी हमें परिवार को बढ़ाने की अनुमति प्रदान नहीं करती है। इसी तरह मैकाईवर एवं पेज के अनुसार –''परिवार पर्याप्त निश्चित यौन संबंध द्वारा परिभाषित तक ऐसा समूह है जो बच्चो के जनन एवं लालन–पालन की व्यवस्था करता है।"[3]

इसी संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा है– ''भारत जैसे भूख पीड़ित देश में विवेक शून्य इतने बच्चों को जन्म देना जिनका समुचित पालन पोषण नहीं किया जा सकता एक

निर्दयता पूर्ण अपराध है।''[4] इस तरह परिवारिक जीवन की शिक्षा हमें परिवार को सीमित करके उसको एक सुन्दर व्यवस्था के साथ जीवन यापन करना सिखाती है।

पारिवारिक जीवन की शिक्षा एक शैक्षिक प्रयत्न है, जो किसी भी व्यक्ति को एक सुरक्षा और पारिवारिक जीवन प्रदान करता है। पारिवारिक कार्यकर्त्ताओं के द्वारा मानव विकास के क्षेत्र में कार्यों के कुछ उदाहरण हैं, जैसे– विवाह पूर्व शिक्षा, परिवार आर्थिक कार्यक्रम, पारिवारिक जीवन की शिक्षा, शिक्षा के इतिहास में अनौपचारिक रूप से दी जाती है, जो विवाह के साथ ही एक पीढ़ी से दूसरी को पास की जाती है, जिसके माध्यम निम्न हैं :–

(1) लिखित सूचनाओं द्वारा।
(2) धार्मिक ग्रन्थों द्वारा।
(3) क्षेत्रीय कार्यों द्वारा प्रसार, प्रचार, किया जाए।
(4) सेमीनार द्वारा।
(5) विज्ञापनों द्वारा।

"Family Life Education (F.L.E.) is the effort made by several American professional organizations and Universities to strengthen families through social science Education." अंत में निष्कर्ष स्वरूप कहना जरूरी है कि परिवार इस सम्पूर्ण मानव समाज की ईकाई है और व्यक्ति परिवार की एक इकाई है। अतः व्यक्ति महत्वपूर्ण इकाई है। व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिक, धार्मिक, संस्कारिक और सामाजिक विकास बड़े ही तकनीकि तरीके से होना चाहिए।

शोधकर्त्रा ने पारिवारिक जीवन की शिक्षा में सीमित परिवार की शिक्षा, यौन शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक आध्यात्मिक और नैतिक संस्कारिक शिक्षा पर भी बल दिया है। यह सब मिलकर व्यक्ति का चारित्रिक विकास करते है तथा चरित्र सर्वोपरि होता है जो निम्न संदर्भ से स्पष्ट है :–

''सितम्बर 2007 शिकागो विश्व विजय समारोह''[5] में वर्तमान चुनौतियाँ विषय पर (पी. रामेश्वरन्) ने सार गर्भित व्याख्यान में कहा– ''स्वामी विवेकानंद के पास भविष्य में भारत को देखने के लिए एक अदभुत स्वप्न था। उन्होंने कहा था कि ''भारत का उदय शारीरिक नहीं बल्कि चारित्रिक शक्ति से होगा।'' यह विचार विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद्मश्री पी. परमेश्वरन् ने व्यक्त किए। उनका कहना था कि ''भारत सिर्फ मातृभूमि नहीं, बल्कि हमारी पुण्य भूमि और कर्मभूमि भी है।"

पारिवारिक जीवन की शिक्षा जनसंख्या शिक्षा की एक शाखा है। सामान्य अर्थों में जनसंख्या शिक्षा, जनसंख्या के सम्पूर्ण ज्ञान को शिक्षा के साथ मजबूती से जोड़ने का एक सफल प्रयास है। पारिवारिक जीवन की शिक्षा जनसंख्या शिक्षा की एक शाखा है। जो चित्र क्र. 2 वर्गीकरण से स्पष्ट है।

वर्तमान समय में पारिवारिक जीवन की शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही है। शोधकर्त्ता द्वारा अपने शोध विषय **''पारिवारिक जीवन की शिक्षा के प्रति अभिभावकों की रूचि, अभिवृत्ति एवं प्रेरणा"** को जानने का विनम्र प्रयास किया जा रहा है, जो पूर्णतः उचित साबित होता है।

पारिवारिक जीवन की शिक्षा की पुष्टि करते हुए रेड्डी ने सन् 1944 में कहा है कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास में परिवार की बहुत अहं भूमिका होती है। पारिवारिक जीवन की शिक्षा के संदर्भ में वास्ता ने भी 1991 में पक्ष में अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहा है कि ''पारिवारिक जीवन की शिक्षा अपने परिवार के साथ रिश्ते रखना, निभाना सिखाती है। उनका मत है कि लोगों को ऐसा शिक्षित करें कि जब वे विकसित हो जायं तब वे अपने वातावरण के साथ सामन्जस्य स्थापित कर सकें।

''इसी प्रकार ''इनसाईक्लोपीडिया'' में पारिवारिक जीवन की शिक्षा के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है कि ''पारिवारिक जीवन की शिक्षा एक शैक्षिक प्रयत्न है जो किसी व्यक्ति को एक सुरक्षा प्रदान करती है। इसके अन्तर्गत कुछ मानव विकास के क्षेत्र में प्रयत्न किए गये जैसे– विवाह पूर्व शिक्षा, पारिवारिक आर्थिक कार्यक्रग, पारिवारिक जीवन की शिक्षा, शिक्षा के इतिहास में अनौपचारिक रूप से दी जानी चाहिए, जो विवाह के साथ ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित की जाय।''[6]

अतः शोधकर्त्ता द्वारा चयन किया गया विषय सार्थक सिद्ध होगा क्योंकि कई शिक्षाविद् भी इसके पक्ष में है। शोधकर्त्ता ने अपने शोध अध्ययन के बिन्दुओं में परिवार को सीमित करने के अलावा यौन शिक्षा, नैतिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा एवं बालक के पूर्ण व्यक्तित्व विकास में परिवार द्वारा दिए गये अच्छे संस्कारों पर प्रकाश डाला है। परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। यह पूर्ण सत्य है।

शोधकर्त्ता का मत है कि जनसंख्या शिक्षा, परिवार को सीमित करने में सहायक है। लेकिन पारिवारिक जीवन की शिक्षा एक आदर्श, सुदृढ़ और सुखी परिवार को जन्म देती है। सुखी परिवार रूपी वृक्ष की जड़े परिवार में ही पनपती है। अतः पारिवारिक जीवन की शिक्षा से हम एक स्वस्थ एवं खुशहाल परिवार की कल्पना को साकार कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) N.P.S. Chandel, Vijay Kumar Nand, Population Education, 2003, Vinod Pustak Mandir, Agra, P.No.-14
(2) रमेश चन्द्र अग्रवाल (प्रकाशक), दैनिक भास्कर समाचार पत्र 11 जुलाई (2008) सिटी रिपोटर (सागर) म.प्र. पेज नं. (4) (सागर सिटी भास्कर)
(3) Wikipedia the free encyclopedia (Redirected from Family Life Education). (इन्टरनेट)
(4) रजनी गौर, एम.एड., शोध प्रबंध 2003–04, सागर विश्वविद्यालय
(5) दैनिक भास्कर समाचार पत्र 3 सितम्बर 2007 पेज नं. 2 (नगर संवाद दाता) भोपाल म.प्र.
(6) इनसाईक्लोपीडिया (विकी पीडिया), इन्टरनेट